दिनांक :- 22-04-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फारूक आजम

स्नातक :- प्रथम खंड कला
विषय :- इतिहास प्रतिष्ठा
इकाई :- चतुर्थ
पत्र :- एक
अध्याय :- ऋग्वैदिक काल स्रोत :-

ऋग्वैदिक काल के अध्ययन के लिये साहित्यिक तथा पुरातात्विक साक्ष्यों का सहारा लिया जाता है।

(1) साहित्यिक साक्ष्य :-
ऋग्वेद एक संहिता है जिसमें दस मण्डल तथा 1028 सूक्त हैं। ऋग्वेद के तीन पाठ मिलते हैं।

(a) साकल – 1017 मंत्र

(b) वालखिल्य – 11 मंत्र

(c) वाष्कल – 56 मंत्र (इनमें से सिर्फ साकल शाखा ही उपलब्ध है)

ऋग्वेद के 10 लाख मण्डलों में दूसरे से सातवें तक का

मंडल सबसे प्राचीन माना गया है जबकि प्रथम तथा दसवां मण्डल परवर्ती काल का माना जाता है।

ऋग्वेद के दूसरे से सातवें मण्डल को गोत्र मंडल नाम से भी जाना जाता है क्योंकि इन मंडलों की रचना किसी खास गोत्र से समबंध एक ही परिवार ने की थी। जैसे -

द्वितीय मंडल - गृत्समद भार्गवि

तृतीय मंडल - विश्वामित्र

चतुर्थ मंडल - वामदेव

पंचम मंडल - अत्रि

षष्ठ मंडल - भारद्वाज

सप्तम मंडल - वशिष्ठ

आठवाँ मंडल - कण्व। अंगीरस

चतुर्थ मंडल के तीन मंत्रों की रचना तीन राजाओं ने की है। इनके नाम है - त्रासदस्यु, अजमीढ़ तथा पुरमीढ़ नवा

मंडल सोम को समर्पित है। अतः इसे सोममंडल कहा गया है दसवां मण्डल सबसे अर्वाचीन है। अतः इसी को एक भाग, पुरुष सूक्त में चतुर्वर्ण व्यवस्था की स्थापना की सूचना मिलती है। इसी मण्डल में देवी सूक्त का उल्लेख है जिसमें वाक् शक्ति की उपासना की गई है। ऋग्वेद का पाठ होता अथवा होतृनाम पुरोहित करते थे। लोपामुद्रा, घोषा, सच्ची, पौलोमी, कक्षावृत्ति नामक विदुषि नारियों ने कतिपय ऋचाओं की रचना की थीं।

ऋग्वेद के रचना की तिथि :-

मैक्समूलर - 1200 - 1000 ईसा पूर्व

जैकोबी - 3000 ईसा पूर्व

तिलक - 6000 ईसा पूर्व

विन्टरनित्स - 2500 - 2000 ईसा पूर्व

मान्य तिथि :- 1500 - 1000 ईसा पूर्व

Scanned with CamScanner

पुरातात्विक साक्ष्य :-

चित्रित धूसर मृद्भाण्ड

खुदाई में हरियाणा के पास भगवानपुर में 13 कमरों वाला मकान मिला है। इसके साथ पंजाब में तीन स्थान ऐसे मिले हैं जिनका संबंध ऋग्वैदिक काल से जोड़ा जाता है।

बोगाजकोई अभिलेख मित्तनी अभिलेख 1400 ई० पूर्व - एक लेख में हित्ती राजा सुप्पिलिमा और मित्तानी राजा मतिऊअजा के मध्य हुई संधि के साक्षी के रूप में वैदिक देवताओं इंद्र, वरुण मित्र, नासत्य का उल्लेख किया गया है।

कस्सी अभिलेख (1600 ई० पू०) - इस अभिलेख में यह सूचना मिलती है कि इनकी आर्यों की एक शाखा भारत आई थी।

आर्यों का मूल निवास स्थान :-

पं० गंगानाथ झा - ब्रह्मर्षि देश

डी० एस० त्रिवेदि - देविका (मुल्तान)

एल.डी कल्ल - कश्मीर तथा हिमालय देश।

तिलक - उत्तरी ध्रुव

मैक्समूलर - मध्य एशिया

रीड्स - वैक्ट्रियाँ

एडवर्ड मेयर, कील ओल्डन वर्ग - पमीर का पाठार

ब्रेन्डेनेस्टिन - यूराल पर्वत के दक्षिण के किर्जिगिका मैदान

पेनका और हर्टे - जर्मनी

गाइल्स - हंगरी या डेन्यूब घाटी

गार्डन चाइल्ड, पीक - दक्षिण रूस

दयानंद सरस्वती - तिब्बत

यहाँ ब्रेन्डेनेस्टिन का मत सर्वाधिक उपयुक्त माना जाता है आर्यों का मूल निवास आल्पस पर्वत के पूर्वी क्षेत्र (यूरेशिया) में था। आर्य किसी जाति का नहीं बल्कि भाषायी समूह का द्योतक है।

राजनीतिक विस्तार

आर्यों ने भारत मे एक से अधिक बार आक्रमण किया

और आर्यों की एक से अधिक शाखा भारत आई। इनमें सब से महत्वपूर्ण आर्य कबीला भारत था। इनके शासक वर्ग का नाम त्रित्सु था। संभवतः सृंजय और क्रीवी कबीले भी उससे संबंध थे। यह ज्ञात होता है कि सरस्वती, दृषद्वती एवं अपाया नदी के किनारे भारत कबीले ने अग्नि पूजा की।

ऋग्वेद में आर्यों के पाँच कबीलों की चर्चा है - पुरु, यदु, तुर्वसु अणु, द्रुह्यु। ये पंजयन नाम से भी जाने जाते थे।

यदु और तुर्वसु को दास भी कहा जाता था।

पुरु को मृधवाच (कूटभाषी) कहा जाता था।

यदु और तुर्वसु के बारे में कहा जाता है कि इन्द्र उन्हें बाद में लाये।

विस्तार :-
ऋग्वेद से जानकारी मिलती है कि आर्यों का विस्तार अफगानिस्तान, पंजाब तथा पश्चिमी उत्तर प्रदेश तक था। सतलुज से यमुना नदी तक का क्षेत्र ब्रह्मावर्त कहलाता था और इसे ऋग्वैदिक सभ्यता का केन्द्र माना जाता था। ऋग्वैदिक आर्यों की पूर्वी सीमा

हिमाचल और तिब्बत. उत्तर में तुर्कीस्तान पश्चिमी में अफगानिस्तान तथा दक्षिण में अरावली तक थी।

ऋग्वेद में नदियों की चर्चा

ऋग्वेद के नदी सूक्त (दसवें मंडल) में विभिन्न नदियों की जानकारी मिलती है। यहाँ पर आर्यों के क्षेत्र में 42 नदियाँ होने की बात की गई है जबकि 19 नदियों के नाम उल्लेखित किये गए है। इसमें आर्यों का निवास स्थान सप्त सैंधव प्रदेश बतलाया गया है।

सिंधु नदी प्राचीन काल की सुषोमा नदी एक असाधारण नदी थी तथा यह सप्त सैंधव प्रदेश की पश्चिमी सीमा थी। ऋग्वेद में सिंधु नदी की सरस्वती के बाद सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण नदी के रूप में चर्चा हुई है। सिंधु नदी का उल्लेख ऋग्वेद के नदी स्तुति के अतिरिक्त अन्य मंत्रों में भी हुआ है। यह परावत अर्थात अरब सागर में गिरती थी। वैदिक साहित्य में इस नदी के तट पर मानवीय आवश्यकता की सभी वस्तुएं बहुलता में प्राप्त होने का उल्लेख है।

Scanned with CamScanner